IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, September 2023

"वर्तमान युग में शिक्षा का बदलता परिवेश"

राकेश कुमार
(यू0जी0सी0नेट0 शिक्षा शास्त्र)
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन, महर्रा ललितपुर

सारांश–वर्तमान समय बहुत तेजी से बदल रहा है इसमें चाहे बात करें शिक्षा के पाठ्यक्रम की और चाहे शैक्षिक उद्देश्यों की, शैक्षिक वातावरण की, अनुशासन की, विद्यार्थियों की ,चाहे शिक्षक की जवाब देही और गरिमा की, सभी में धीरे–धीरे परिवर्तन हो रहा है । आज शिक्षा को रोजगारपरक बनाए जाने की बात की जा रही है और होनी भी चाहिए। लेकिन इसमें हम विद्यार्थियों में नैतिकता ,संस्कार, उत्तरदायित्व की भावना, सामाजिक परिवेश ,समायोजन की अनदेखी नहीं कर सकते। आज आठवीं ,दसवीं के विद्यार्थी, किशोर उम्र के विद्यार्थी किसी भी जोखिम उठाने से पीछे नहीं है और कई आपराधिक वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। अभी घटित हुई मणिपुर की सामाजिक घटना जिसकी ना कि सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व में थू–थू हो रही है। तो जरूरत है हमें फिर से उन्हें वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति, विचारधाराओं की, संस्कारों की जिससे मानव को मानव समझा जा सके ।

संकेताक्षर –जवाबदेही,रोजगारपरक, समायोजन, मणिपुर, सामाजिक, संस्कार, आध्यात्मिक, आत्मानुभूति, उन्नति, इंटरनेट, आक्रामक, परिपक्वता, तालमेल, मानवीय मूल्य, अभिप्राय,।

प्रस्तावना– देखा जाए तो परिवर्तन ही संसार का नियम है तो इससे शिक्षा भी अछूती नहीं रह सकती। शिक्षा में भी वैदिक कालीन युग से लेकर वर्तमान तक कई धर्मों का प्रभाव रहा है कई हुकूमतों का प्रभाव रहा है जिससे शिक्षा का परिवेश बदलता रहा है। जिस तरह से लोगों की इच्छाएं बढ़ती जा रही है उसी तरह से उन्हें पूरा करने के लिए आदमी मशीन की तरह दौड़ भाग कर उन्हें पूरा करने की जद्दोजहद करता नजर आ रहा है। जिस स्तर वैदिक कालीन शिक्षा में शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति, धार्मिक भावना, चारित्रिक विकास, नैतिकता, आत्मानुभूति हुआ करते थे। यह सभी कालखंडों में परिवर्तन होते हुए वर्तमान में अभियुक्त उद्देश गौण नजर आने लगे हैं। लोगों के व्यवहार में यह चीजें लुप्त होती जा रही हों मनुष्य मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है और आज सिर्फ संवेदनहीन, स्वार्थी और सिर्फ अपना उल्लू कैसे सीधा हो इस पर अत्यधिक जोर दे रहा है। तो जैसा समाज है वैसे ही शिक्षा पद्धति संचालित हो रही है। उपयुक्त चीजें खत्म होकर सिर्फ रोजगारपरक शिक्षा की बात हो रही है। जैसे भी हो शिक्षा को रोजगारपरक होना चाहिए क्योंकि उससे समाज की मांग होती जा रही है। आज से आज के इंटरनेट के युग में मानव तकनीकी विकास के चरणों से होता हुआ आज एक ऐसी स्थिति में आ पहुंचा है। जहां से सिर्फ चीजें असंभव प्रतीत नहीं होती हैं। आज बच्चे समय से पहले एडल्ट होते जा रहे हैं। कारण उनकी पहुंच में समय से पहले तो सारी जानकारी इंटरनेट के माध्यम से पहुंच रही है जो एक निश्चित समय के बाद पहुंचने चाहिए। जिससे वे घातक, आक्रमक हो रहे हैं । लोगों के अंदर से संवेदनाएं समाप्त हो रहे हैं। अभी कुछ दिन पहले हुई मणिपुर की घटना लोगों को झकझोर देती है कि क्या हम आज सब समाज में रह रहे हैं यह सभ्य समाज के कार्य हैं। यदि शिक्षा को हम व्यवहार में नहीं लाएंगे निश्चित ही हम पशु के समान होंगे।

शोध अध्ययन की आवश्यकता –शोध अध्ययन की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई कि आज पढ़े लिखे लोग बेरोजगार, असामाजिक,पाशविक कार्य कर रहे हैं। जिंदगी से तालमेल नहीं बैठा पा रहे हैं, समाज से तालमेल नहीं बैठा पा रहे हैं। क्या कारण है कि यह लोग ऐसा कर रहे हैं कहां भूल हो रही है जिसमें मानवीय आचरण को छोड़कर, मानव पशु होता जा रहा है। जिसमें जरूरत है ऐसी शिक्षा की जो लोगों में मानवीय मूल्यों का विकास कर उन्हें चरित्रवान बनाएं देश व समाज के प्रति एक जिम्मेदार नागरिक बनाएं और शिक्षा कंप्लीट होने पर वह किसी रोजगार से जुड़े। जिससे वह अपना और अपने परिवार का भरण पोषण कर सके जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है कि शिक्षा एक बीमे की तरह होनी चाहिए जो मैच्योरिटी पर एक अच्छा भविष्य दे जैसा उन्होंने कहा कि शिक्षा से मेरा अभिप्राय है– बालक तथा मनुष्य के मन शरीर और आत्मा के सर्वांगीण विकास से है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन करना।
2. शिक्षा में शिक्षक के महत्व का अध्ययन करना।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, September 2023

3.शिक्षा में पाठ्यक्रम का अध्ययन करना ।
4.शिक्षा में अनुशासन का अध्ययन करना।
5. शिक्षा में विद्यार्थियों की रुचियां का अध्ययन करना ।
6. शिक्षा द्वारा सभ्य समाज की नागरिकता का अध्ययन करना।

शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन करना– शिक्षा के उद्देश्यों कि हम चर्चा करें तो पाते हैं कि वैदिक कालीन शिक्षा में शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति रहा है तथा जैसा कि कहा गया है **"सा विद्या या विमुक्तए"** विद्या वह है जो मुक्त दिलाए। धीरे–धीरे चीजें बदली अध्यात्म नैतिकता के बाद बौद्ध काल के बाद इस्लाम काल में सौन्दर्य, कला, स्थापत्य कला, जीवकोपार्जन का उद्देश्य रहा है। ब्रिटिश सरकार कि शिक्षा का उद्देश्य उसकी भाषा अंग्रेजी का प्रचार प्रसार तथा जब एक भारतीय अंग्रेजी भाषा नहीं जानेगा तब तक उनकी कार्यप्रणाली क्रियान्वित नहीं हो सकेगी । इसलिए मैकाले ने कहा कि हमें ऐसे वर्ग का निर्माण करना है जो हमारे और उन लोगों के बीच बिचौलिए का काम करें जिन पर हम शासन करते हैं। इस तरह अंग्रेजी शिक्षा अर्जित करना महत्वपूर्ण हो गया।

शिक्षा के महत्व का अध्ययन– शिक्षक शुरू से ही सम्मानीय रहा है प्राचीन कालीन परंपरा में गुरु को बालक का आध्यात्मिक पिता कहा जाता था कबीर ने यहां तक कहा है कि गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए इससे गुरु की महिमा कितनी उच्च कोटि की प्रतीत हो रही है बौद्ध काल इस्लामिक ब्रिटिश काल में से होते हुए वर्तमान तक शिक्षक की प्रतिष्ठा में क्रमशः गिरावट देखने को मिल रही है आज शिक्षक को एक कर्मचारी के रूप में एक सेवा दाता के रूप में देखा जाता है जिसका दुष्परिणाम है शिक्षा की अवनति। शिक्षक भी विद्यार्थी से उतना ही वास्ता रखता है जितना पर्याप्त है क्योंकि विद्यार्थी को इतनी अधिक फ्रीडम हो गई है जिससे शिक्षक का कद कम महसूस हो रहा है।

शिक्षा के पाठ्यक्रम का अध्ययन करना –पाठ्यक्रम शिक्षक के लिए एक दिशा तय करती है जिस पर चलकर शिक्षक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करता है पाठ्यक्रम समय और समाज की आवश्यकता अनुसार बदलते रहते हैं महाभारत एवं रामायण के समय विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में पुरुषों के लिए घुड़सवारी, तलवारबाजी, मल्ययुद्ध, तीरंदाजी, युद्धाभ्यास कराया जाता था क्योंकि यह उस समय की मांग थी। लेकिन आज के समय में समाज से नैतिकता आदर्श संस्कार मानवीय गुणों की कमी लोगों के व्यवहार में देखने को मिल रही है जिस कारण व्यक्ति धीरे–धीरे बगैर पूछ वाला पशु होता जा रहा है लोगों के अंदर से संवेदनाएं समाप्त हो रही हैं तो जरूरत है ऐसे पाठ्यक्रमों की जिसमें नैतिकता संस्कार मर्यादा मानवीय गुण शामिल हो।

शिक्षा में अनुशासन– बगैर अनुशासन के हम मानवी जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में कठोर अनुशासन होता था विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से ब्रह्मचारी व्रत का पालन करना होता था बाहर की मनोरंजन वाली दुनिया विद्यार्थियों के लिए खत्म हो चुकी थी। इस्लामिक शिक्षा प्रणाली में कठोर शरीर दंड की शुरुआत हो चुकी थी। इसमें बालकों को सबक याद ना करने पर शारीरिक दंड दिया जाता था। अंग्रेजी प्रणाली में विद्वानों फ्रावेल,माण्टेशरी, रूसो आदि ने बालक की स्वतंत्रता पर जोर दिया है और मुत्यात्यमक अनुशासन की बात कही है। इसी का परिणाम है कि आज बाल केंद्रित शिक्षा प्रणाली है जिसमें बालक महत्वपूर्ण है ना कि शिक्षक।

विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना– वर्तमान में सीबीएस चॉइस बेस्ड सिस्टम है जिसमें विद्यार्थी अपनी क्षमता व रुचि के अनुरूप शिक्षा को चुनता है और उसी के अनुरूप अपना प्रोफेशन अपनाता है जब कोई भी व्यक्ति अपनी पसंद का कार्य करता है तो उसकी परिणति अच्छी होती है उसका परिणाम भी सकारात्मक निकलता है। इसलिए बालको पर शिक्षा थोपनी नहीं चाहिए। मनोविज्ञान कहता है कि बालकों को उनकी रुचि के अनुसार पढ़ाया जाना चाहिए जब बालक का मन हो तब पढ़ाना चाहिए जो वह पढ़ना चाहता है उसे पढ़ाया जाना चाहिए।

सभ्य समाज के लिए उत्तम नागरिकता का निर्माण– सभ्य समाज ही विकास की दूरी होते है इसलिए शिक्षा द्वारा अनुशासित होकर जीवन जीना चाहिए और उसमें उत्तम नागरिकता के गुण विकसित हो ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए। अशिक्षित अपराधी समाज विरोधी व्यक्ति हमेशा से समाज के लिए हानिकारक होता है इसकी देश की गति में कोई योगदान नहीं होता तो जैसा सभी काल खंडों में उत्तम नागरिकता के विकास पर बल दिए जाने की बात कही गई है और यह तभी संभव होगा जब शिक्षण संस्थाएं ईमानदारी से पक्षपात रहित होकर कर्मठता से कार्य करें।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, September 2023

निष्कर्ष –शिक्षा के कारण ही लोगों की उन्नति सम्भव है इसके बदलते परिवेश की बात करें तो हमें उपयुक्त चर्चा में पाया कि परिवर्तन संसार का नियम है इसमें शिक्षा के परिवेश में बदलाव प्रासंगिक है लेकिन बात करें इसकी पाठ्यचर्या उद्देश्यों की अनुशासन की तो आधुनिकता और परिवर्तन में भी इसकी मौलिकता ना बदले तो यह समाज के लिए लाभदायक रहेगा इसलिए उत्तम नागरिकता सामाजिक समायोजन समभाव वसुंधरा कुटुंबकम की भावना इसका हमेशा उद्देश्य होना चाहिए क्योंकि इनके अलावा या अभाव में हम अच्छे इंसान की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

संदर्भ सूची–

[1]. भारतीय आधुनिक शिक्षा जर्नल जनवरी 2017 एनसीईआरटी नई दिल्ली।
[2]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत भारत सरकार।
[3]. मालती सारस्वत एवं प्रोफेसर एस एल गौतम भारतीय शिक्षा का विकास एवं उनकी समस्याएं आलोक प्रकाशन इलाहाबाद।
[4]. अवनीन्द्र शील भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं 2009 साहित्य रत्नाकर कानपुर।